पाठ 18. परीक्षा

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य स्व-जागरूकता का कौशल विकसित करना है ताकि वे अपनी पसंद व नापसंद की पहचान कर सकें। जिसकी नजर केवल अपने लक्ष्य पर होती है, वही जीवन में कामयाबी हासिल करता है। इस पाठ में इसी बात की ओर इशारा किया गया है। जीवन में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए स्वयं जागरूक होना पड़ता है और इसके लिए एकाग्रचित्त की आवश्यकता होती है।

पाठ का सार

गुरु द्रोणाचार्य अपने शिष्यों की परीक्षा ले रहे हैं। मिट्टी की बनी चिड़िया की ओर इशारा करके वे कहते हैं कि जो इसकी आँख पर निशाना लगा देगा, वही परीक्षा में उत्तीर्ण होगा। एक-एक करके सभी शिष्य आते हैं मगर अपने लक्ष्य में कामयाब नहीं होते। अंत में गुरु जी अर्जुन से पूछते हैं कि तुम्हें क्या-क्या दिखाई दे रहा है। अर्जुन कहता है, "केवल चिड़िया की आँख की पुतली दिख रही है।" अर्जुन निशाना लगाता है तथा चिड़िया की आँख भेद देता है। अंत में, सभी शिष्यगण संकल्प लेते हैं कि वे हमेशा अपना ध्यान लक्ष्य पर और केवल लक्ष्य पर ही लगाएँगे। लक्ष्य को पाना कभी नामुमकिन नहीं होता, बस ज़रूरत होती है केवल लक्ष्य पर ध्यान रखने की।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  द्रोणाचार्य, कौरव-पांडव और महाभारत की चर्चा पाठ शुरू करने के पहले अवश्य करें। पाठ का सार भी पहले बता दें। पाठ का कोई अंश चुनकर कुछ बच्चों से अभिनयसहित वाचन करवाएँ। पाठ से मिलने वाली शिक्षा पर चर्चा करें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - उपसर्ग और प्रत्यय की परिभाषा दें। अभ्यास में आए उपसर्गों व प्रत्ययों के अतिरिक्त अन्य उदाहरण दिए जा सकते हैं। शब्द के पाँच भेदों व उनके उदाहरण की चर्चा करें।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - इन क्रियाकलापों का उद्देश्य स्मरण-शक्ति व अवलोकन क्षमता का विकास करना है। इन क्रियाकलापों को करने में बच्चों को अपेक्षित सहयोग व दिशा-निर्देश दें।